5

मसीही व्यक्ति में आज पवित्र आत्मा का काम

पवित्र आत्मा किसी पापी के जीवन में नया जन्म दिलाने में काम करता है। जल और आत्मा से नये जन्म में किसी के जीवन में आत्मा का अलौकिक कार्य तो है, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में आज भी आश्चर्यकर्म के द्वारा कार्य करता है। अगले पाठ में पहली शताब्दी की कलीसिया में पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म से काम करने पर ध्यान दिया जाएगा। परमेश्वर स्वर्ग से अपनी प्रेरणा से दिए गए संदेश को देते हुए उसकी पुष्टि कर रहा था, इसलिए आत्मा का आश्चर्यकर्म से कार्य करना आवश्यक और स्वाभाविक था। यीशु की नई वाचा की सच्चाइयां दिए जाने और उनकी पुष्टि होने के बाद, प्रकाशन के आश्चर्यकर्म का कार्य जारी रखने की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु यह तथ्य कि अब पवित्र आत्मा मसीही लोगों में नये प्रकाशन और आश्चर्यकर्म के द्वारा दान नहीं देता, का अर्थ यह नहीं कि कलीसिया में उसने सक्रिय रूप से कार्य करना बन्द कर दिया है। सच्चाई यह है कि मसीहियत वह धर्म है, जिसमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा उन लोगों में, जिन्होंने नये सिरे से जन्म लिया है और "... आत्मा के अनुसार चलते हैं" (रोमियों 8:4) अर्थात निरन्तर कार्य करते हैं।

आत्मा की सामर्थ (आश्चर्यकर्म के उसके काम)

पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के द्वारा कार्य करने के मुख्य शब्द नये नियम में मिलते हैं। यीशु ने अपने प्रेरितों के साथ अन्तिम मुलाकात में उन्हें प्रतिज्ञा दी थी कि वे "स्वर्ग से सामर्थ" पाएंगे (लूका 24:49)। यीशु ने बताया कि यह प्रतिज्ञा तब पूरी होगी "जब पवित्र आत्मा *तुम पर आएगा*" (प्रेरितों 1:8)। नये नियम में, जब पवित्र आत्मा का वर्णन *किसी पर आने,* या किसी को सामर्थ देने के लिए होता है तो उसमें आश्चर्यकर्म की गतिविधि शामिल होती है (तुलना गिनती 11:25; न्यायियों 14:6; 1 शमूएल 16:13; 19:20; यशायाह 61:1; मत्ती 3:16; 12:18; प्रेरितों 2:1-4; 10:44-46; 19:6)।

प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन, हम योएल की भविष्यवाणी के पूरा होने का आरम्भ देखते हैं कि परमेश्वर ने "अपना आत्मा *सब मनुष्यों पर*" उण्डेलना था (प्रेरितों 2:17)। योएल ने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि आत्मा का उण्डेला जाना आश्चर्यकर्म के साथ

होना था: ''और वे भविष्यवाणी करेंगे और मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत काम, और नीचे धरती पर चिह्न, ... दिखाऊंगा'' (प्रेरितों 2:18, 19)। पिन्तेकुस्त के इस ऐतिहासिक दिन से आरम्भ करके (हमारे संसार में कलीसिया के जन्म दिन से), हम बड़े चिह्नों और अद्‌भुत कामों के बारे में पढ़ते हैं, जिसमें पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को अपने काम में सामर्थी बनाने के लिए आश्चर्यकर्म के द्वारा काम किया।

प्रेरितों 8 अध्याय में हम सामरिया के लोगों के मन परिवर्तन के बारे में पढ़ते हैं। आयत 16 बताती है कि पवित्र आत्मा ''उनमें से किसी पर न *उतरा* था।'' इन मसीही लोगों को ''प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा दिया गया'' था, इसलिए हम मानते हैं कि उन्हें पवित्र आत्मा के दान की प्रतिज्ञा मिली थी (प्रेरितों 2:38); परन्तु उनमें से कोई भी प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा उन पर पवित्र आत्मा *न उतरने से पहले* (प्रेरितों 8:17, 18) आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता था।

प्रेरितों 10:44-46 में, जब पवित्र आत्मा अन्यजातियों *पर उतरा* तो वे अन्य-अन्य भाषाएं बोलने लगे थे। प्रेरितों 19:6 में पौलुस के इफिसुस के चेलों पर हाथ रखने पर ''पवित्र आत्मा *उन पर उतरा,* और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे।''

पवित्र आत्मा की सामर्थ या *इन मसीहियों* पर उतरने के द्वारा आश्चर्यकर्म की ये घटनाएं सब मसीहियों को दी गई सामान्य प्रतिज्ञाओं से भिन्न हैं। पश्चात्तापी, बपतिस्मा लेने वाले विश्वासियों को ''पवित्र आत्मा का दान'' देने की प्रतिज्ञा की गई है (प्रेरितों 2:38)। यूहन्ना ने पवित्र आत्मा के मसीही लोगों को दिए जाने की बात की है (1 यूहन्ना 3:24; 4:13), जैसे 1 थिस्सलुनीकियों 4:8 में पौलुस ने की थी। गलातियों 4:6 में हम पढ़ते हैं, ''और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।'' आत्मा के दिए जाने या ''हमारे हृदयों में'' भेजे जाने में और मसीही लोगों पर आत्मा के ''उतरने'' में अन्तर पर ध्यान दें। जब आत्मा किसी पर ''उतरा'' या ''आया,'' तो इसमें आश्चर्यकर्म होता था, परन्तु पहली शताब्दी में पवित्र आत्मा की उपस्थिति का अर्थ हमेशा आश्चर्यकर्म नहीं होता था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपनी मां की कोख से ही ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' था (लूका 1:15), तौ भी उसने ''कोई चिह्न नहीं दिखाया'' (यूहन्ना 10:41)। हर मसीही को ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने की आज्ञा है (इफिसियों 5:18), परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सब मसीही चिह्न दिखा सकते हैं और अद्‌भुत काम कर सकते हैं। आज पवित्र आत्मा का काम पहली शताब्दी की कलीसिया में अपने काम की तरह ही खुला, स्पष्ट और आश्चर्यजनक ढंग से होने के बजाय पूर्व प्रबन्ध (दृश्य के पीछे) से काम करना है। इस शृंखला में आगे हम आत्मा के आश्चर्यकर्म के द्वारा काम करने की समीक्षा करेंगे, पर हमारे इस पाठ में उसकी आवश्यकता के अनुसार काम पर ज़ोर दिया जाएगा।

आत्मा का वास (आवश्यकता के अनुसार उसका काम)

आज मसीही व्यक्ति के पवित्र आत्मा के साथ सम्बन्ध को यूनानी शब्द *oikeo* से

समझाया जाता है। अंग्रेज़ी की न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड बाइबल में इस शब्द का अनुवाद "dwell," "indwell" और "live" किया गया है। यह यूनानी शब्द *oikos* से लिया गया है, जिसका अर्थ "बसेरा" है, और मसीही लोगों के साथ पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में चार बार इस्तेमाल हुआ है (रोमियों 8:9, 11; 1 कुरिन्थियों 3:16; 2 तीमुथियुस 1:14)। पवित्र आत्मा के मसीही लोगों के शरीर में अपना बसेरा बनाने और उनमें रहने की शिक्षा को पौलुस ने कितने सुन्दर शब्दों में बताया है, क्योंकि वे परमेश्वर का नये नियम का मन्दिर हैं।

इससे हमारे मन में एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है: "यदि पवित्र आत्मा है और आज हमारे जीवनों में रहता है, तो हमारे लिए वह क्या करता है?" आज कुछ गम्भीर मसीही यही प्रश्न पूछ रहे हैं। कई वर्ष पूर्व मैं एक ऐल्डर के पास गया था, जिसने माना कि वह लम्बे समय से विश्वास करता था कि बपतिस्मा लेने के समय उसे पवित्र आत्मा का दान मिला है। "परन्तु," उसने जोड़ा कि "मुझे वास्तव में यह पता नहीं था कि मुझे यह दान क्यों मिला है। यदि पवित्र आत्मा आश्चर्यकर्म करने के दान अब नहीं देता, तो वह क्या कर रहा है?" हमें इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा।

आत्मा एक मुहर के रूप में

बाइबल सिखाती है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर की संतान के रूप में हम पर मुहर कर देता है। पौलुस ने लिखा है, "उसी में ... [तुम] पर ... प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी" (इफिसियों 1:13)। मन फिराने और पानी से मसीह में बपतिस्मा लेने पर हम मसीह को पहन लेते हैं (गलातियों 3:27)। पवित्र आत्मा के दान के द्वारा यीशु हमारे जीवनों में आता है और परमेश्वर अपनी संतान के रूप में चिह्न लगाकर हम पर अपनी मुहर लगा देता है। पहली शताब्दी में, मुहरों से सुरक्षा और संरक्षण का आश्वासन मिलता था। उदाहरण के लिए, यीशु की कब्र पर यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई हमारे प्रभु की देह को चुरा न सके, रोमी सरकार की मुहर लगाई गई थी (मत्ती 27:66)। प्रकाशितवाक्य 7 में 1,44,000 लोगों पर पहचान के लिए और परमेश्वर के उद्धार पाए हुए लोगों की सुरक्षा के रूप में मुहर लगाई गई। पवित्र आत्मा की मुहर आत्मिक जगत के लिए परमेश्वर का अदृश्य चिह्न है कि हम उसकी सम्पत्ति हैं और वह व्यक्तिगत रूप से हमारी रक्षा करेगा और "[हमारे] छुटकारे के दिन" (इफिसियों 4:30) तक हमारे लिए प्रबन्ध करता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर का चिह्न, हमारे पुत्रत्व और पिता के प्रेम का उसका सजीव आश्वासन है।

आत्मा बयाने के रूप में

पवित्र आत्मा "हमारी मीरास का बयाना" भी है (इफिसियों 1:14)। बयाने के लिए यूनानी शब्द *arrabon* है। बयाने से विचार यह मिलता है कि पवित्र आत्मा स्वर्ग में हमारी अनन्त मीरास के लिए परमेश्वर का बयाना है। वह हमें दिया गया परमेश्वर का बयाना है कि वह यीशु के साथ नई वाचा का अपना भाग, जिसमें हमने प्रवेश किया है, ईमानदारी से पूरा करेगा। यह दिलचस्प है कि यूनानी शब्द *arrabona* मंगनी की अंगूठी के लिए है।

जब कोई युवक किसी युवती को उससे विवाह करने के लिए अपना बयाना देता है, तो वह उसे भविष्य में उसके साथ विवाह करने की अपनी प्रतिबद्धता को दिखाने के लिए *ऐराबोना* (मंगनी की अंगूठी) देता है। 2 कुरिन्थियों 11:2 से पौलुस के शब्दों को याद करने पर हमें इस अलंकार की पूरी समझ आ जाती है: ''क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं , इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं।'' हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा की उपस्थिति परमेश्वर का दिया हुआ बयाना है कि यदि हम यीशु के साथ विवाह की अपनी शपथों पर बने रहते हैं तो इनमें से एक दिन हमें उसकी निर्दोष दुल्हन के रूप में उसके सामने प्रस्तुत किया जाएगा (देखें इफिसियों 5:25-27; प्रकाशितवाक्य 21:2)। एक अर्थ में, पृथ्वी पर इस जीवन में हम मसीह की मंगेतर हैं, जबकि स्वर्गीय राज्य में हम उसकी पत्नी होंगे।

दान के रूप में आत्मा

पवित्र आत्मा के दान में अपने बच्चों के लिए परमेश्वर का अनन्त जीवन भी शामिल है। पाप में मरे होने और हम में शैतान के आत्मा के वास करने के विपरीत (इफिसियों 2:1, 2) परमेश्वर की संतान को ''मसीह के साथ जिलाया'' गया है (इफिसियों 2:5)। परमेश्वर से जुदाई आत्मिक मृत्यु है। आत्मा के वास के द्वारा ''मसीह के साथ'' जुड़ना जीवन है। ''और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है, जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है'' (1 यूहन्ना 5:11, 12)। मेमने के लहू से हमारे प्राणों के धोए जाने के समय, यीशु हमारी आत्माओं को अनन्त जीवन देते हुए स्वयं हम में वास करने लगता है! ''जल और आत्मा से जन्म'' (यूहन्ना 3:5) होने का अर्थ है कि परमेश्वर के पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु का जीवन हमारी आत्माओं में बोया गया है। यूहन्ना 15 में यीशु ने दाख और उसकी टहनियों के दृष्टांत से आत्मा के जीवन को समझाया है। जैसे टहनी को जीवन दाख से मिलता है, वैसे ही हमें भी जीवन यीशु से मिलता है, जो कि आत्मिक दाख है। हम विश्वास के द्वारा मसीह में रहते हैं; और उससे जीवन लेते हैं, वह हम में धार्मिकता का आत्मिक फल देता है (यूहन्ना 15:4; गलातियों 5:22, 23)। ''और यदि मसीह तुम में है, तो ... आत्मा धर्म के कारण जीवित है'' (रोमियों 8:10)। पवित्र आत्मा के वास का होना हम सब में ''एक सोता बन जाता है, जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहता है'' (यूहन्ना 4:14) और हमारे अन्दर से ''जीवन के जल की नदियां'' बहती हैं (यूहन्ना 7:38, 39)।

अन्दरूनी सामर्थ के रूप में आत्मा

पवित्र आत्मा की भीतरी उपस्थिति शैतान के विरुद्ध आत्मिक युद्ध में परमेश्वर की संतान को सामर्थ देती है। पौलुस ने ऐलान किया कि ''आत्मा से'' हम ''देह की क्रियाओं को मारते'' हैं (रोमियों 8:13)। बहुत से मसीही लोग शैतान पर विजय पाने के लिए

अपनी सामर्थ और दृढ़ संकल्प पर भरोसा रखते हैं। उन्हें यीशु की चेतावनी याद दिलानी आवश्यक है: ''मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5)। अपने आप में पर्याप्त होने के व्यवहार के विपरीत, पौलुस ने दृढ़ विश्वास को दिखाया: ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियां 4:13)। मसीही जीवन विश्वास का जीवन है, जिसमें हम ''... यीशु पर ध्यान करते हैं, ... कि हम निराश होकर हियाव न छोड़ दें'' (इब्रानियों 12:2, 3)। हमारी विजय प्रभु यीशु मसीह में और ''उसकी शक्ति के प्रभाव में'' है (इफिसियों 6:10)।

आपने कभी ध्यान दिया है कि इफिसियों 6 में वर्णित मसीही सिपाही को प्रभु यीशु के साथ कैसे जोड़ा गया है? हमें अपनी कमर सच्चाई से कसनी है और यीशु ''सच्चाई'' है (यूहन्ना 14:6)। हमें ''धार्मिकता की झिलम पहिननी'' है (इफिसियों 6:14), और यीशु हमारा धर्म है (1 कुरिन्थियों 1:30)। हमें ''पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिनने'' हैं (इफिसियों 6:15), और यीशु ही सुसमाचार का संदेश है (1 कुरिन्थियों 2:2; 15:3, 4)। हमें ''ढाल'' लेनी है (इफिसियों 6:16), और प्रभु हमारी ढाल है (तुलना भजन संहिता 33:20)। हमें ''उद्धार का टोप'' लेना है (इफिसियों 6:17), और हमारा भरोसा है कि यीशु हमारा अनन्त उद्धार है (तुलना प्रेरितों 4:12)। परमेश्वर के वचन के रूप में, यीशु (यूहन्ना 1:1) ''आत्मा की तलवार'' है (इफिसियों 6:17), जिसके द्वारा हम शैतान के हमलों का मुकाबला कर सकते हैं। आश्चर्य की बात नहीं कि पवित्र आत्मा अपने आप को नहीं, बल्कि यीशु को महिमा देता है (यूहन्ना 16:14)। पवित्र आत्मा के द्वारा ही हमें ''भीतरी मनुष्य में सामर्थ'' दी जाती है ताकि ''विश्वास के द्वारा मसीह [हमारे] हृदय में बसे'' (इफिसियों 3:16, 17)। ''मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है'' (कुलुस्सियों 1:27)। जब हम अपने विश्वास की आंखें यीशु पर लगाते और अच्छी लड़ाई लड़ने के लिए उसकी सामर्थ पर भरोसा रखते हैं तो आत्मा हमें सामर्थ देता है।

अलग्ज़ैंडर कैम्पबैल ने लिखा है:

> [पवित्र आत्मा के] इस दान के बिना किसी का उद्धार नहीं हो सकता था या अन्तत: हर विरोध पर विजय नहीं पाई जा सकती थी ... । उसे जो अपने आप को संसार अर्थात शरीर और शैतान की संयुक्त सेनाओं के विरुद्ध लड़ने में सक्षम मानता है, पाप के धोखे या परीक्षा का सामना करने के बारे में बहुत कम पता है। ... [परन्तु] अपने पवित्र आत्मा के द्वारा, आपकी प्रार्थनाओं के उत्तर में, [परमेश्वर] हम में, और हमारे द्वारा, और हमारे लिए हमारे वर्तमान, आत्मिक और अनन्त उद्धार के लिए आवश्यक बातों में कार्य करता है।[1]

सहायक के रूप में आत्मा

पवित्र आत्मा परमेश्वर की संतान की प्रार्थना करने में भी सहायता करता है। पौलुस ने मसीही लोगों को आज्ञा दी कि ''आत्मा में प्रार्थना ... करते रहो'' (इफिसियों 6:18)। ''आत्मा में प्रार्थना'' करने के लिए मन से प्रार्थना करने से बड़ी बात है। ''आत्मा और सच्चाई

से'' (यूहन्ना 4:24) की गई कोई भी आराधना वह आराधना है, जो पवित्र आत्मा की भूमिका को पहचानती है कि वह परमेश्वर के पास हमारी प्रार्थनाओं में हमारी सहायता करता है। कितना अद्‌भुत आश्वासन है कि आत्मा जो स्वर्ग में रहता है, वही आत्मा कलीसिया में भी रहता है! हम पढ़ते हैं, ''इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर-भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है। और मनों का जांचने वाला जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है'' (रोमियों 8:26, 27)। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो आत्मा हमारे साथ प्रार्थना करता है, हमें बड़ा आश्वासन देता है कि विश्वास से और मन से की गई प्रार्थनाएं प्रभु के सामने सुगन्धित धूप के रूप में ऊपर जाती हैं (प्रकाशितवाक्य 8:3, 4)।

सारांश

परमेश्वर की महिमा के लिए मसीही जीवन जीने में हमारी सहायता करने में आत्मा के काम को समझते हुए, हम ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने की आवश्यकता को देख सकते हैं (इफिसियों 5:18)। आत्मा से परिपूर्ण जीवन अपने आप पर केन्द्रित होने के बजाय यीशु पर ध्यान लगाने वाला जीवन होता है। यह वह जीवन है, जो प्रभु के रूप में यीशु को अपना आप सौंप देता है, और हमारा प्रभु कोई ऐसा दूर गया राजा नहीं है, जिसकी हम सेवा करते हों। अपने पवित्र आत्मा के द्वारा वह हर समय मौजूद चरवाहा है, जो हमारे प्राणों को बहाल करने और हमारी हर आवश्यकता पूरी करने की प्रतिज्ञा करता है। भजन लिखने वाले के साथ हर मसीही कह सकता है, ''निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ-साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा'' (भजन संहिता 23:6)। आमीन!

टिप्पणी

[1]अलग्ज़ेंडर कैम्पबैल, द *क्रिश्चियन सिस्टम* (सिंसिनटी, ओहायो: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग, 1839), 49-50.